डबलिन में अंधविश्वास की भेंट चढ़ी मॉली मैलोनी की मूर्ति, स्तन छूकर करते थे कामना

डबलिन। आयरलैंड की राजधानी डबलिन में स्थित प्रसिद्ध मॉली मैलोनी की मूर्ति अंधविश्वास की वजह से क्षतिग्रस्त हो गई है। यह कांस्य प्रतिमा पिछले कई दशकों से पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बनी हुई थी, लेकिन अब इसकी हालत इतनी खराब हो गई है कि इसके संरक्षण की मांग उठने लगी है। दरअसल, एक प्रचलित मान्यता के चलते लोग इस मूर्ति के स्तनों को छूकर अपनी किस्मत चमकाने की उम्मीद रखते थे। इस कृप्रथा का असर यह हुआ कि मूर्ति के उस हिस्से का रंग उतरने लगा है और प्रतिमा की सुंदरता प्रभावित हो गई है। समस्या तब शुरू हुई जब लोगों ने यह मानना शुरू कर दिया कि अगर कोई इस मूर्ति के स्तन को छूता है तो उसकी किस्मत अच्छी हो जाएगी। इस अंधविश्वास को पर्यटकों ने और अधिक बढ़ावा दिया और कई टूर कंपनियों ने भी इस मान्यता को प्रचारित किया। परिणामस्वरूप, हर दिन हजारों लोग इस मूर्ति को छूने लगे, जिससे प्रतिमा का वह हिस्सा खराब हो गया। अब डबलिन प्रशासन इस मामले को गंभीरता से ले रहा है और मूर्ति के संरक्षण के लिए आवश्यक कदम उठाने पर विचार कर रहा है। हालांकि, सवाल यह उठता है कि क्या सिर्फ मूर्ति को संरक्षित करना काफी होगा या समाज में इस तरह के अंधविश्वास और महिलाओं के प्रति असंवेदनशील व्यवहार पर भी रोक लगानी होगी?

युवती ने शुगर डैडी की तलाश में अपनाया अनोखा तरीका

सिडनी (ईएमएस)। आस्ट्रेलिया के शहर सिडनी की रहने वाली 22 साल की शियाने फॉक्स अपने अनोखे कदम की वजह से चर्चा में हैं। हाल ही में शियाने ने अपने लिए एक अमीर बुजुर्ग साथी ढूंढने का अनोखा तरीका अपनाया। युवती ने एक चलते-फिरते ट्रक पर अपना विज्ञापन लगवाया, जिसमें उन्होंने अपने लिए एक शुगर डैडी की तलाश का ऐलान किया। इस विज्ञापन में शियाने की बोल्ड तस्वीर के साथ उनका फोन नंबर और इंस्टाग्राम हैंडल भी दिया गया था। ट्रक पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था, क्या आप अमीर, बुजुर्ग और अकेले हैं? मैं एक शुगर डैडी की तलाश में हूं। इस विज्ञापन के लिए शियाने ने करीब 2,000 ऑस्ट्रेलियाई डॉलर (लगभग 1.08 लाख रुपये) खर्च किए और इसे मॉस्मन इलाके में चलवाया, जो ऑस्ट्रेलिया के सबसे संपन्न इलाकों में से एक है। यहां कई अमीर और बुजुर्ग लोग रहते हैं, जिन्हें शियाने अपने लिए एक आदर्श साथी मानती हैं। इस ट्रक के चलते ही उन्होंने रातोंरात सुर्खियां बटोर लीं और सोशल मीडिया पर भी छा गईं।

बेहद हल्की गैलेक्सी की खोज की वैज्ञानिक ने

नई दिल्ली (ईएमएस)। अमेरिकी खगोलविदों ने एक बेहद हल्की गैलेक्सी की खोज की है। यह गैलेक्सी हमारी पड़ोसी एंड्रोमेडा गैलेक्सी के चारों ओर घूम रही है। खगोलविदों ने इस गैलेक्सी को एंड्रोमेडा एक्सएक्सएक्सवी नाम दिया गया है। यह अब तक देखी गई सबसे फीकी और सबसे छोटी गैलेक्सी है। वैज्ञानिकों के सामने सबसे बड़ा सवाल यह है कि इतनी छोटी गैलेक्सी अब तक बची कैसे रही, क्योंकि अब तक माना जाता था कि इतनी हल्की आकाशगंगाएं ब्रह्मांड की शुरुआती गर्म और घनी परिस्थितियों में टिक नहीं पातीं। लेकिन एंड्रोमेडा एक्सएक्सएक्सवी इस धारणा को गलत साबित कर रही है। मिशिगन यूनिवर्सिटी के खगोलविद एरिक बेल का कहना है कि यह गैलेक्सी पूरी तरह से सक्रिय है, लेकिन यह हमारी मिल्की वे की तुलना में दस लाख गुना छोटी है।

वैज्ञानिकों ने एनाकोंडा की नई प्रजाति की खोज की

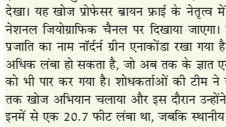

क्वीटो (ईएमएस) वैज्ञानिकों ने विशालकाय एनाकोंडा की एक नई प्रजाति की खोज की है, जिसने शोधकर्ताओं को चौंका दिया है। वैज्ञानिकों ने इक्वाडोर के बैहुआरी वाओरानी क्षेत्र में इस विशाल एनाकोंडा को देखा। यह खोज प्रोफेसर ब्रायन फ्राई के नेतृत्व में की गई, और इसे नेशनल जियोग्राफिक चैनल पर दिखाया जाएगा। नई खोजी गई इस प्रजाति का नाम नॉर्दर्न ग्रीन एनाकोंडा रखा गया है। यह 20 फीट से अधिक लंबा हो सकता है, जो अब तक के ज्ञात एनाकोंडा के आकार को भी पार कर गया है। शोधकर्ताओं की टीम ने जंगल में 10 दिनों तक खोज अभियान चलाया और इस दौरान उन्होंने कई नमूने पकड़े। इनमें से एक 20.7 फीट लंबा था, जबकि स्थानीय वाओरानी समुदाय के अनुसार इस क्षेत्र में कुछ एनाकोंडा 24 फीट से भी अधिक बड़े हो सकते हैं। यदि यह सत्यापित होता है, तो ये दुनिया के सबसे बड़े सांप साबित होंगे। वैज्ञानिकों के लिए यह खोज आसान नहीं थी। उन्हें डोंगी से नदियों के बीच से होते हुए जंगलों की गहराई में प्रवेश करना पड़ा।एनाकोंडा को उथले पानी में शिकार की प्रतीक्षा करते हुए देखा गया। शोधकर्ताओं ने कई नमूनों का अध्ययन किया, जिससे इस नई प्रजाति की विशिष्टता की पुष्टि हुई। यह खोज इस बात का सबूत है कि अमेजन के घने जंगल अब भी अनगिनत रहस्यों को समेटे हुए हैं। वैज्ञानिकों का मानना है कि भविष्य में ऐसी ही खोजें हमें प्रकृति के और भी अनदेखे जीवों से परिचित करा सकती हैं।

यथार्थ लेखन का नया आयाम

'पत्थर पर बुवाई'

विजय सिंह चौहान

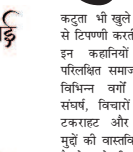

अधिवक्ता एवं लेखक विजय सिंह चौहान द्वारा प्रस्तुत 'पत्थर पर बुवाई' लघु कथा संग्रह आधुनिक हिंदी कथा साहित्य में एक नवीन एवं प्रगल्भ दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इस संग्रह में ÷सुपरहिट÷ लघुकथाओं के माध्यम से लेखक ने न केवल अपनी लेखनी की प्रामाणिकता और सम्यकता को उजागर किया है, बल्कि समाज के उन पहलुओं को भी संवेदनशीलता से छुआ है जो आज की युवा पीढ़ी और बुजुर्गों दोनों के लिए दिशानिर्देश का कार्य करते हैं।

कहानियाँ, जैसे कि ÷गुहार÷, ÷टूटी पगडंडी मौसम, बोझ़ाऔर गृह, न केवल दैनिक जीवन की वास्तविकताओं का प्रतिबिंब हैं, बल्कि उनमें छिपे सामाजिक, राजनीतिक और व्यक्तिगत संघर्षों का भी गहन चित्रण मिलता है। लेखन की सरलता में छिपी गहराई पाठकों को सोचने पर मजबूर कर देती है। लेखक के नए मुहावरों और अनुभूतियों के माध्यम से वह आम जनजीवन की बारीकियों को नई दृष्टि से पेश करते हैं, जिससे हर कहानी में मानवीय संवेदनाओं का अद्भुत संगम देखने को मिलता है।

'पत्थर पर बुवाई' में दर्ज कहानियाँ - जैसे ÷स्वामी÷, ÷सुगंधित÷, ÷पुष्प÷, ÷वैलेंटाइन÷ और ÷प्रश्न÷ - सामाजिक व्यवस्थाओं, चुनावी राजनीति की कटुता भी खुले दिल से टिपण्णी करती हैं। इन कहानियों में परिलक्षित समाज के विभिन्न वर्गों का संघर्ष, विचारों की टकराहट और उन मुद्दों की वास्तविकता है जो हमारे जीवन के रोजमर्रा के अनुभव में गहराई से जुड़ी हुई हैं।

जीवन की छाया और प्रकाश

लेखक ने अपनी कहानियों के माध्यम से जीवन की तपती धूप में शीतल छांव का अनुभव कराया है। चाहे वह गहरी मांग मन की मिट्टी, उत्सव या अलाव÷की कहानियाँ हों, हर एक कथा में भावनाओं की एक लहर, संवेदनाओं की गहराई और समाज के उन अनकहे पहलुओं की झलक मिलती है, जो पाठकों के दिल को छू जाती है।

वर्तमान युग की भटकती युवा पीढ़ी तथा बुजुर्गों के लिए चौहान जी की कहानियाँ एक प्रेरणास्पद संदेश देती हैं। उनकी लेखनी में यथार्थवाद का ऐसा समागम देखने को मिलता है, जो न केवल हमारे दैनिक जीवन के अनुभवों से जुड़ा है, बल्कि उनमें निहित सामाजिक और नैतिक प्रश्नों पर भी प्रकाश डालता है। कहानियाँ गठरी, सबूत, उपवास और सत्कर्म में इस बात का प्रमाण मिलता है कि साहित्य का असली उद्देश्य पाठकों को नयी सोच, आत्मनिरीक्षण और समाज सुधार की दिशा में उन्मुख करना है।

'पत्थर पर बुवाई' एक ऐसा संग्रह है जहाँ विजय सिंह चौहान ने अपनी यथार्थवादी लेखनी के जरिए समाज की बारीकियों, व्यक्तिगत अनुभवों और सामयिक मुद्दों का बेहतरीन चित्रण किया है।

रेनू शब्दमुखर
साहित्यकार, जयपुर

शिव और शक्ति; राधा-कृष्ण एवं काली का एकात्म स्वरूप

हिंदू धर्म में ईश्वर और शक्ति को अलग नहीं देखा जाता, बल्कि वे एक ही सत्य के दो रूप हैं। शिव अस्तित्व का आधार हैं, तो शक्ति उसकी चेतना और क्रियाशील स्वरूप। यही कारण है कि जहां शिव हैं, वहां शक्ति भी अनिवार्य रूप से होती हैं। यह अद्वैत स्वरूप ही हमें यह समझने में सहायता करता है कि राधा-कृष्ण और शिव-पार्वती, एक ही ब्रह्मतत्व की दो अलग-अलग अभिव्यक्तियाँ हैं।पद्म पुराण में वर्णित शिव-पार्वती का राधा-कृष्ण रूप में अवतरणपद्म पुराण में एक रोचक प्रसंग मिलता है, जिसमें माँ पार्वती भगवान शिव से आग्रह करती हैं कि द्वापर युग में वे राधा के रूप में अवतरित हों और वह स्वयं कृष्ण के रूप में प्रकट हों। शिव इस अनुरोध को स्वीकार करते हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि राधा और कृष्ण, शिव-पार्वती के ही अवतार हैंयही कारण है कि उज्जैन में महाकाल बाबा की सवारी गोपाल मंदिर में श्रीकृष्ण से मिलकर ही आगे बढ़ती है। यह परंपरा दर्शाती है कि शिव और कृष्ण, तथा पार्वती और राधा एक ही शक्ति के भिन्न-भिन्न रूप हैं।कृष्ण और कालीएक ही ऊर्जा के दो रूपयदि हम गहराई से देखें तो कृष्ण और काली एक ही शक्ति के दो पहलू हैं।दोनों का जन्म अष्टमी के दिन हुआ है।दोनों का बीज मंत्र क्लीं है, जिसे विभिन्न स्थानों पर क्रीं के रूप में भी उच्चारित किया जाता है।कृष्ण प्रेम, करुणा और भक्ति के प्रतीक हैं, तो काली महाशक्ति, संहार और रक्षा का स्वरूप हैं।कृष्ण की रासलीला और काली की तांडवी शक्ति, दोनों ही सृजन और संहार के संतुलन को दर्शाते हैं।

दुर्गा सप्तशती में काली और विष्णु का संबंधदुर्गा सप्तशती के प्रथम अध्याय में वर्णन आता है कि जब मधु और कैटभ नामक असुरों का आतंक बढ़ गया, तब ब्रह्मा जी ने योगमाया अर्थात महाकाली का स्तवन किया ताकि वे भगवान विष्णु को जागृत करें और उन्हें उन राक्षसों के वध की प्रेरणा दें।इससे यह स्पष्ट होता है कि महाकाली ही वह आदिशक्ति हैं, जो सृष्टि की रक्षा हेतु आवश्यक प्रेरणा उत्पन्न करती हैं। वही शक्ति श्रीकृष्ण में कार्यरत होती है और वही शिव के भीतर काली के रूप में स्थित होती हैं।शिव और शक्ति- अनंत ब्रह्म की व्याख्या

शास्त्रों में कहा गया है—

शिवोऽहम् शिवोऽहम् सच्चिदानंदरूपः।अर्थात, शिव ही सच्चिदानंद स्वरूप हैं। किंतु यदि शिव स्थिर हैं, तो शक्ति उन्हें गति प्रदान करती हैं। यही कारण है कि शक्ति कभी राधा बनकर भक्ति का सर्वोच्च आदर्श बनती हैं, तो कभी काली बनकर महाप्रलय का रूप धारण कर लेती हैं।

एकात्मता की सिद्धि

जब हम इन पौराणिक कथाओं का विश्लेषण करते हैं, तो यह स्पष्ट हो जाता है कि शिव और शक्ति ही इस सृष्टि में ईश्वर के प्रतिरूप हैं। उनकी शक्ति ही कभी राधा बनकर कृष्ण के साथ प्रेम का संचार करती है, तो कभी काली के रूप में महाविनाश का रूप धारण करती है। शिव स्वयं कभी राधा बनकर लीला करते हैं, तो कभी महाकाल बनकर कालों के भी काल कहलाते हैं।

इस प्रकार, यह सिद्ध होता है कि शिव-पार्वती, राधा-कृष्ण और काली सभी एक ही ब्रह्मतत्व के विभिन्न आयाम हैं। यह दिव्य एकता ही हिंदू धर्म की वह गूढ़ आध्यात्मिक सच्चाई है, जो संपूर्ण सृष्टि की रहस्यात्मकता को प्रकट करती है।

रामचन्द्र धर्मदासानी,
उज्जैन।

निंदिया धीरे से आ जा

आसमान के विस्तृत भाल पर साँझ के सितूरी छींटों की बूँदें पड़ते ही सूर्यदेव अस्ताचल की ओर प्रस्थान करने लगते हैं। अवनि के आँगन में सूरज की किरणों का स्थान निशा देवी द्वारा लिए जाने से पहले संध्या थोड़े समय के लिए अस्थायी चार्ज में रहती हैं। रात आते ही आलस्य के साथ कुछ पल रहने के बाद इंसानी तन-मन विश्राम के आग़ोश में जाने लगता है। दिन का एक तिहाई समय निद्रा के पहलू में बिताकर मानव स्वयं को रिचार्ज किया करते हैं। खुशकिस्मत लोगों को नींद नहीं आती। तरोताजा होने के लिए वे नींद के भरोसे रहने को मजबूर नहीं होते। उन्हें जिंदगी के पासिंग मार्क्स यानी तैंतीस फीसदी टाइम को नींद में गँवाने के बजाय सदुपयोग करने की अतिरिक्त सुविधा ऐसे मिलती है जैसे शॉपिंग माल में दस हजार की खरीदारी करने पर सौ रुपए का वाउचर मुफ्त में मिल जाए।नींद न आना वरदान से कम नहीं। न सोएँगे, न खर्राटे लेंगे, न किसी का चैन हराम करेंगे। न सोएँगे, न सपने देखेंगे, न सपने टूटने का गम सहना होगा। न सोएँगे, न समय व्यर्थ करने का इल्जाम लगेगा। निंदिया रानी को पलकों पर बिठाने से मुक्ति मिलेगी। जागते रहने से चोरी का भय भाग जाता है, शोध का विषय हो सकता है। इन दोनों के बीच मुहावरे गढ़नेवाले, चैतन्य और उनींदे से, टहलते मिल जाएँगे। किसी की नींद उड़ी हुई होगी तो किसी की नींद हराम। कोई घोड़े बेचकर सोनेवालों से ईर्ष्या कर रहा होगा तो कोई एक आँख खोलकर सोने में माहिर होगा। महाभारत के हीरो अर्जुन को गुडाकेश भी कहते हैं क्योंकि उन्होंने गुडाका अर्थात नींद को जीत लिया था। धार्मिक आख्यानों में निद्रा देवी को नमस्कार करते हुए कृपा करने की प्रार्थना की जाती है। अनेक लोग अपनी नींद को बाहरी शोर से डाकर उचटने से बचाने के लिए खर्राटों का पहरा बिठा देते हैं। ये खर्राटे केवल अपने मालिक के वफादार होते हैं, उन्हें इसकी परवाह नहीं होती कि दूसरे उनके बारे में क्या कहेंगे। कुछ खर्राटे तो अति उत्साह में अपने वॉल्यूम के बटन को फुल पर ले जाते हैं। लगता है, नींद वह शारीरिक और मानसिक अवस्था है जिसमें इंसान बेसुध होकर आराम की चरम अवस्था में पहुँच जाता है। होश में न रहने का भाव कवियों, शायरों को बेहद प्रिय है। वे तो जैसे बेखुदी में कहीं के कहीं पहुँच जाने को उधार ही बैठे रहते हैं। मिर्जा गालिब ने सवाल पूछा है, 'मौत का एक दिन मुअ`यन है, नींद क्यूँ रात भर नहीं आती'। अमीर मीनाई देवदूतों की अपेक्षा नींद को तवज्जो देते हुए अनुरोध करते हैं, 'शब-ए-फ़ुर्क़त का जागा हूँ फ़रिश्तो अब तो सोने दो, कभी फ़ुर्सत न कर लेना हिसाब आहिस्ता आहिस्ता'। सिनेमा कब पीछे रहनेवाला है! फिल्मी गीतकारों ने अपनी कलम से नींद की जमकर सेवा की है। 'नींद न मुझको आए', 'मेरी नींदों में तुम', 'नींद कभी रहती थी आँखों में', 'नींद उड़ जाए तेरी', 'मेरी आँखों से कोई नींद लिए जाता है' जैसे अनेक गाने किसे पसंद नहीं होते? माताएँ अपने बच्चों पर निद्रा देवी की कृपा पाने के लिए अक्सर लोरी की शरण लिया करती हैं। सपनों का कॉपीराइट नींद के पास है। नींद को बायपास कर जागती आँखों से सपने देखनेवाले लोग हिम्मती होते हैं। होश-ओ-हवास में देखे गए सपनों को पूरा करने के प्रयासों में तकदीर लिखने की कुव्वत होती है।

-रमेश रंजन त्रिपाठी
इंदौर

युवा पीढ़ी का जीवन जटिल,

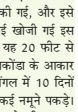

आज से तीन-चार दशक पूर्व तक देश के युवा वर्ग का जीवन इतना चुनौती पूर्ण नहीं था। इसका कारण यह हो सकता है कि टेक्नोलॉजी इतनी उन्नत नहीं थी। साथ ही हमारी महत्वाकांक्षाएं एवं आवश्यकतायें भी सीमित थी। पिता का परंपरागत व्यवसाय या कृषि कार्य बेटों को विरासत में मिल जाता था। परिवार की सहमति से अरेंज मैरिज हुआ करती थी। जीवन सहज सरल होता था। संयुक्त परिवारों में जिम्मेदारियां बट जाती थी। पर आज के दौर में परिस्थितियां एकदम विपरीत है। नवीनतम टेक्नोलॉजी के साथ युवाओं को अपडेट रहना जरूरी है। टेक्नोलॉजी के दुष्प्रभाव से बचने का टास्क भी युवा के समक्ष होता है। युवाओं के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती पढ़ाई के लिए विषय चयन को लेकर एवं रोजगार की तलाश करने की होती है। अपने पसंदीदा एवं रुचि के क्षेत्र में केरियर बनाने के लिए उसे मेहनत और मशक्कत करना होती है। विवाह के पश्चात स्टेटस मेंटेन करने का तनाव भी बच्चों को झेलना होता है। वर्तमान हालातो में आज की युवा पीढ़ी का जीवन तनावपूर्ण एवं जटिल होता जा रहा है।

ललित महालकरी इंदौर

मेन ऑफ प्लैटिनम के साथ मनाइए धोनी की अटूट विरासत का जश्न!

आईपीएल का सीजन शुरू होते ही क्रिकेट का जुनून सबके सर चढ़ कर बोल रहा है। थाला एक बार फिर पीली जर्सी पहनने के लिए तैयार हैं, जिससे पूरे देश के फैन्स में जोश भर गया है। हर एमएस धोनी के फैन्स के लिए यह सिर्फ एक खेल नहीं, बल्कि विश्वास, धैर्य और अमर पलों से जुड़ा एक अटूट रिश्ता है। तो इस सीजन इस महान खिलाड़ी को सम्मान दें और अपने फैनडम को गर्व से पहनें मेन ऑफ़ प्लेटिनम एक्स एमएस धोनी सिग्नेचर एडिशन के साथ। बड़ी ही बारीकी से बना यह दुर्लभ प्लैटिनम एक ऐसा धातु है, जो क्रिकेट के इस महानायक की विरासत की तरह अटूट और अमर है।यह सिर्फ ज्वेलरी नहीं, बल्कि एक ऐसा ज़रिया है जिससे फैंस अपना प्यार दिखा सकते हैं, धोनी की विरासत का जश्न मना सकते हैं और उनकी बेमिसाल भावना की निशानी को हर जगह अपने साथ ले जा सकते हैं।

सहजयोग आज का महायोग

जीवन की जटिलताओं को आसान बनाता है - सहज योग।

जीवन है तो उतार चढ़ाव? आते ही रहेंगे, यही उतार चढ़ाव जीवन को अर्थपूर्ण बनाते हैं। कभी कहीं कोई बाधा आये तो उस बाधा से निकलने का दौर सकारात्मक दृष्टिकोण वालों के लिए रोमांचक होता है और बाधा से मुक्त होते ही मिलती है आत्मिक संतुष्टि और जीतने की खुशी। परंतु सत्य तो यह है कि जीवन में आने वाली इन जटिलताओं को सहजता से लेना तभी संभव होगा जब हम संतुलन में हों। जरा सी तकलीफ होते ही घबरा जाने की प्रवृत्ति हमारी परेशानी को और बढ़ा देती है फलस्वरूप समस्या का समाधान मिलना मुश्किल हो जाता है। आज के दौर में जब समाज व विश्व में अशांति की स्थिति बनी हुई है तब इन? सबसे तटस्थ रह पाना मुश्किल हो जाता है। पर, हमें समाज और विश्व की समस्याओं पर विचार करते हुए भी, उन समस्याओं का हिस्सा होते हुये भी मनस्थिति पर काबू पाने का गुर आना चाहिए। यह आज के दौर की आवश्यकता है। यदि हम स्वयं पर काबू नहीं रख पाते हैं तो स्वयं भी दुखी रहेंगे और परिवार को भी नहीं संभाल पायेंगे। परिवार के सभी सदस्यों को सहज योग विधा को सीखना चाहिए ताकि जीवन के हर पड़ाव पर शांति से रह सके। ज्यादातर लोग यह जानते हैं कि परमात्मा का निवास हमारे अंदर है पर इसका अनुभव? नहीं कर पाने से वे असमंजस की स्थिति में रहते हैं। सहज योग की संस्थापिका परम पूज्य श्री माताजी निर्मला देवी ने कुंडलिनी जागरण और ध्यान योग की इस विधा को जन जन तक पहुंचाने का संकल्प लिया और साधकों को आत्मसाक्षात्कार देकर अपने अंदर की ईश्वरीय शक्ति का आभास कराया। आज लाखों लोग सहज योग के माध्यम से ध्यान करते हुये निश्चिन्त शांतिपूर्ण जीवन जी रहे हैं। 24 ??सितंबर 1995 के? प्रवचन में श्री माताजी ने कहा किसहज योग से ये सभी छोटी-छोटी समस्याएं आसानी से हल हो सकती हैं। लेकिन एक बात यह है कि आपको एक व्यक्ति के रूप में एकजुट होकर काम करना चाहिए, एक संघ का अभिन्न अंग। और यह भी समझने की कोशिश करें कि आप अपनी समस्याओं को कैसे हल कर सकते हैं... ऐसी बहुत सी चीजें हैं जिनके बारे में आप सोच सकते हैं क्योंकि अब आप आत्मसाक्षात्कारी आत्मा हैं क्योंकि ईश्वर की मदद है और साथ ही आप खुद भी बहुत सतर्क हो गए हैं। संघ से श्री माताजी का तात्पर्य सहज योग की सामुहिकता से है। भारत व? विदेशों में भी किये गये चिकित्सा शोध ने यह दर्शाया है कि सहज योग के माध्यम से शारीरिक और मनोदैहिक रोगों से मुक्ति पाई जा सकती है। हम परमात्मा से जुड़े बिना अपने जीवन का अर्थ नहीं जान सकते हैं। ??जैसे ही हमें अपने जीवन का अर्थ समझ में आ जायेगा, हमारे जीवन में पूर्णकालिक वसंत का प्रवेश हो जायेगा। हर जटिलता को सही समाधान मिलेगा। चलिये सहज योग से जुड़ते हैं। सहज योग निशुल्क भी है और आसान? भी सहजयोग ध्यान केंद्र की जानकारी हेतु टोल फ्री नंबर 1800 2700 800 वेबसाइट 222.sahajayoga.org.in

दर्पण

सुनील शर्मा,
राजेंद्र नगर इंदौर
+91 99260 20094

अहंकार पतन की निशानी

अहंकार पतन की निशानी है।आज हमारा समाज एक विचित्र स्थिति में खड़ा है, यह विचार सुनने में केवल अंधानुकरण की प्रवृत्ति की ओर चल पड़ा है। चाहे वह राजनेता हो या धार्मिक नेता, व्यक्ति पूजा से कोई भी देश समृद्ध नहीं होते। हमें होश पूर्वक तय करना होगा, आखिर हम किस दिशा में समाज को ले जा रहे हैं।आज देश में जो वास्तविक स्थितियों को अनदेखा करने की परिस्थितियां उत्पन्न हो रही है, वह कतई उचित नहीं है। इसमें राजनेता ,धार्मिक गुरु, स्वयं हम लोग जो इस देश के नागरिक हैं, सभी का सामूहिक फर्ज बनता है। आज से 10 साल पहले इस देश में भले ही भौतिक समृद्धि इतनी ना हो पर एक सुकून का वातावरण था , क्या कारण है ? हमें इसकी तह में जाना होगा। वैसे मुझे तो इसका स्पष्ट एक ही कारण जान पड़ता है, हर क्षेत्र में जो नैतिक क्षरण हुआ है वह इसकी मूल जड़ है। हमने धन को इतना अधिक महत्व दे दिया है कि हम सामाजिक मूल्यों व नियमों की अनदेखी करने लगे , और यही हमारे पतन का कारण बन रहा है। समय रहते इस अहंकार से राजनेता उबरे, क्योंकि उनकी सबसे अधिक जवाबदेही है, इसलिए कि वे शासन संचालित करते हैं। आज दुर्भाग्य से देश में हमारे राजनेता इस प्रकार की रीति-नीति का निर्माण कर रहे हैं कि हमें देश की आवश्यक और जो मूलभूत आवश्यकता है कृषकों की, मजदूरों की, छोटे काम धंधे वाले लोगों की उस और सरकार का ध्यान नहीं है।महारे देश के नीतिकार भूल गए कि अहंकार से देश नहीं चला करते देश सही नीति से चला करते हैं। सरकार की कुछ नीतियां स्वागत योग्य है, पर कुछ नीतियां जिन पर पूर्ण मंथन नहीं किया गया और समाज में लाया गया है, उस पर शासन को फिर पूर्ण मंथन करना चाहिए

विशेष; अहंकार से देश नहीं चला करते,अहंकार किसी का भी हो अंततः समाज के पतन का कारण सिद्ध होता है, अतः सही तरीके से अपने अपने पक्ष को रखें, यही प्रजातंत्र है।

पैनासोनिक ने पेश की एसी की नई रेंज

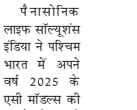

पैनासोनिक लाइफ सॉल्यूशंस इंडिया ने पश्चिम भारत में अपने वर्ष 2025 के एसी मॉडल्स की नई रेंज लॉन्च की। 55?ष्ट तक के बेहद गर्म तापमान में भी प्रभावी ढंग से काम करेगी पश्चिम भारत में इंदौर कंपनी के लिए महत्वपूर्ण बाजार बना हुआ है। कंपनी की यह रेजिडेंशियल एयर कंडीशनर (आरएसी) श्रृंखला स्मार्ट लिविंग को नये अंदाज में परिभाषित करने के साथ-साथ चिलचिलाती गर्मी के दौरान 55 डिग्री सेल्सियस तक के तापमान का सामना करने की क्षमता रखती है। नई रेंज में 1.0, 1.5 और 2.0 टन के 61 मॉडल शामिल हैं, जो अब देशभर के प्रमुख रिटेल स्टोर्स, ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म्स और पैनासोनिक के ऑनलाइन ब्रांड स्टोर पर उपलब्ध हैं।इन एयर कंडीशनरों को कंपनी के आईओटी सक्षम %मिराई% प्लेटफॉर्म से नियंत्रित किया जा सकता है।